भारतीय प्रत्यक्ष निवेश कंपनियों की विदेशी देयताओं एवं आस्तियों के संबंध में गणना : 2014-15*

विदेशी देयताओं और आस्तियों के संबंध में वार्षिक गणना (एफएलए) निवासी भारतीय कंपनियों, जिन्होंने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश(एफडीआई) प्राप्त किया है और/या उन्होंने विदेशों में प्रत्यक्ष निवेश(ओडीआई)किया है, को कवर करता है। यह आलेख 2014-15 में की गई एफएलए गणना के दौर में सामने आए प्रमुख निष्कर्षों को प्रस्तुत करता है जिसमें 16,242 कंपनियां शामिल थीं और उनमें से 14,296 कंपनियों (विदेशी अनुषंगियों सहित) ने अंतर्वाही निवेश होने की सूचना दी। इन परिणामों में अंतर्वाही और बहिर्वाही प्रत्यक्ष निवेश की स्थिति को अंकित मूल्य और बाजार मूल्य एवं भारत में देश/ सेक्टर के आधार पर एफडीआई की प्रोफाइल को शामिल किया गया है। इस गणना में भारत में ओडीआई कंपनियों की विदेशी अनुषंगियों के लिए और विदेशी अनुषंगी कंपनियों की सेक्टर-वार खरीद/बिक्री (घरेलू और निर्यात/आयात दोनों) को भी विदेशी सहयोगियों की व्यापार सांख्यिकी (एफएटीएस) के तहत समग्र स्तर पर दर्शाया गया है।[1]

प्रस्तावना

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (डीआई) विभिन्न देशों के बीच पूंजी प्रवाह का मुख्य घटक है, जिसमें किसी एक अर्थव्यवस्था के किसी निवासी निवेशक का प्राप्तकर्ता अर्थव्यवस्था के किसी उद्यम में निवेश करने के कारण दूरगामी प्रबंधन हित शामिल हो जाता है, जो उस उद्यम के प्रबंधन में उसे नियंत्रक (50 प्रतिशत या उससे अधिक की ईक्विटी भागीदारी) अथवा उसको काफी हद तक प्रभावित करने की क्षमता (10 प्रतिशत या उससे अधिक की ईक्विटी भागीदारी) प्रदान करता है। प्रत्यक्ष निवेशक, कोई व्यक्ति, आपसे में संबंधित व्यक्तियों का समूह, कोई निगमित अथवा अनिगमित उद्यम (सरकारी अथवा निजी), आपस में संबंधित उद्यमों का समूह, कोई सरकार, न्यास अथवा अन्य संगठन हो सकते हैं जो कोई उद्यम का स्वामित्व रखते हों।

किसी देश के भुगतान संतुलन (बीओपी) की दृष्टि से, चालू खाते में अधिशेष/ कमी का वित्तपोषण प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सहित अन्य प्रकार के लेन-देनों के माध्यम से किया जाता है, जिससे देश के निवल आस्ति स्वामित्व में परिवर्तन उत्पन्न होता है। स्थानीय दबाव परिस्थितियों के त्वरित संचरण से उत्पन्न विभिन्न देशों के बीच आस्ति/देयताओं के संबंध में होने वाले बड़े स्तर के परिवर्तनों में यह शक्ति होती है कि वे वैश्विक असंतुलन तथा वित्तीय अस्थिरता की स्थितियां उत्पन्न कर दें। तदनुसार, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने विभिन्न देशों के बीच होने वाले निवेश संबंधी आंकड़ों के उपलब्धता एवं सामयिकता में सुधार लाने के प्रयासों पर ध्यान केंद्रित किया है। आंकड़ों का संकलन करने के इन प्रयासों में समन्वित पोर्टफोलिओ निवेश सर्वेक्षण (सीपीआईएस) एवं समन्वित प्रत्यक्ष निवेश सर्वेक्षण (सीडीआईएस) शामिल हैं जिनको विभिन्न देशों के बीच पोर्टफोलिओ और प्रत्यक्ष निवेश के समग्र रूप से तथा निकटतम प्रतिपक्षी अर्थव्यवस्थाओं-दोनों के तुलनीय आंकड़ों की उपलब्धता एवं गुणवत्ता में सुधार लाने का काम सौंपा गया है।

रिज़र्व बैंक ने वर्ष 2011 में उन भारतीय कंपनियों जिन्होंने पिछले वर्ष(र्षों) में, अद्यतन वर्ष सहित, एफडीआई प्राप्त किया है और/या विदेशों में सीधे निवेश किया है, के *लिए विदेशी देयताओं और आस्तियों के संबंध में वार्षिक विवरणी (एफएलए)*[2] निर्धारित की थी। एफडीआई/ओडीआई अनुषंगी कंपनी (अर्थात् उक्त विदेशी निवेशक जिसकी धारिता कुल ईक्विटी के 50 प्रतिशत से अधिक है) के मामले में, निर्यातों, आयातों, घरेलू बिक्री और खरीद सेस संबंधित सूचना भी सेवाओं में विदेशी सहयोगियों की व्यापार सांख्यिकी (एफएटीएस) के तहत एकत्र की जाती है। भुगतान संतुलन, सीपीआईएस, सीडीआईएस और अंतराष्ट्रीय निवेश स्थिति (आईआईपी)से संबंधित सांख्यिकी को समेकित करने के लिए एफएलए गणना के आंकड़ों को इनपुट के रूप में प्रयोग किया जाता है। भारत सहित सीडीआईएस के सहभागी देशों के संबंध में बाजार मूल्यों पर सहभागी देश-वार अंतर्वाही एवं बहिर्वाही प्रत्यक्ष निवेश (ऋण और इक्विटी) के विस्तृत आंकड़े आईएमएफ की वेबसाइट http://data.imf.org/cdis पर उपलब्ध कराए गए हैं।

एफएलए गणना के आंकड़ों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, विदेशों में होने वाले प्रत्यक्ष निवेश तथा अन्य निवेशों के कारण भारतीय

---

* सांख्यिकी एवं सूचना प्रबंध विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई के विदेशी देयताएं एवं आस्ति सांख्यिकी प्रभाग में तैयार किया गया। 2013-14 से संबंधित पिछला लेख भारतीय रिज़र्व बैंक बुलेटिन के फरवरी 2015 अंक में प्रकाशित किया गया था।

[1] इस गणना से संबंधित विस्तृत आंकड़े भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट (www.rbi.org.in)पर डेटा-निर्गम के रूप में 11 दिसंबर 2015 को जारी किए गए हैं।

[2] इन आंकड़ों का संकलन विदेशी मुद्रा प्रबंध अधिनियम (फेमा) 1999 के तहत रिज़र्व बैंक के दिनांक 15 मार्च 2011 ए.पी. (डीआईआर श्रृंखला) परिपत्र संख्या 45 के अनुसार किया गया है। विदेशी मुद्रा देयताओं एवं आस्तियों के बारे में वार्षिक विवरणी का प्रपत्र भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट (www.rbi.org.in → Forms category → FEMA Forms) पर उपलब्ध है तथा अतिरिक्त विवरण ''विदेशी मुद्रा'' खंड में अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों (एफएक्यू) के अंतर्गत दिया गया है।

कंपनियों की विदेशी देयताओं एवं आस्तियों के संबंध में बाजार मूल्य पर समग्र जानकारी शामिल होती हैं किंतु बकाया की स्थिति वर्ष के दौरान होने वाले भुगतान संतुलन के प्रवाहों से अलग होगी क्योंकि उनमें मूल्य तथा विनिमय दर में होने वाले परिवर्तन से उत्पन्न मूल्यन संबंधी परिवर्तनों को भी शामिल किया जाएगा।

II. व्याप्ति

एफएलए गणना के 2014-15 के दौर हेतु 17,642 कंपनियों ने उत्तर भेजे[3] जिसमें से 16,242 कंपनियों के मार्च 2015 के तुलन पत्र में बकाया एफडीआई/ओडीआई था। इन 16,242 कंपनियों में से 84.2 प्रतिशत के पास केवल अंतर्वाही प्रत्यक्ष विदेशी निवेश था, 11.9 प्रतिशत के केवल ओडीआई था और 3.9 प्रतिशत का द्विपक्षीय सीधा निवेश था (सारणी-1)। श्रृखंला के पिछले वार्षिक आलेख में 17,211 कंपनियों को कवर किया गया था जिन्होंने 2013-14 के लिए विवरणी दाखिल की थी, जिसमें से 15778 कंपनियों ने बकाया एफडीआई/ओडीआई[4] सूचित किया था।

सारणी 1 : विदेशी देयताओं और आस्तियों की गणना 2014-15:कवरेज

(कंपनियों की संख्या)

श्रेणी	कंपनी का प्रकार	प्रत्यक्ष निवेश		
		अंतर्वाही और बहिर्वाही -दोनों	सिर्फ अंतर्वाही	सिर्फ बहिर्वाही
गैर सूचीबद्ध कंपनियां	भारत स्थित विदेशी सहयोगी	302	2,836	–
	भारत स्थित विदेशी अनुषंगी कंपनी	210	10,466	–
	अन्य	–	154*	1,479
	कुल	**512**	**13,456**	**1,479**
सूचीबद्ध कंपनियां	भारत स्थित विदेशी सहयोगी	92	135	–
	भारत स्थित विदेशी अनुषंगी कंपनी	23	78	–
	अन्य	–	–	467
	कुल	**115**	**213**	**467**
सकल योग		**627**	**13,669**	**1,946**

* विशेष प्रयोजन माध्यम (एसपीवी) एवं सरकारी निजी सहभागिता (पीपीपी) सहित

[3] कुछ कंपनियों द्वारा अभी रिपोर्ट किया जाना बाकी है, अतः यहां प्रस्तुत किए गए परिणाम अनंतिम हैं।

[4] एफएलए की गणना के प्रत्येक दौर में रिपोर्ट करने वाली प्रत्येक कंपनी के पिछले दो वित्तीय वर्षों के आंकड़े एकत्र किए जाते हैं।गणना दौर के दौरान प्राप्त होने वाले परिणामों की किसी भी सक्रिय तुलना में सभी दौरों के दौरान व्याप्ति (कवरेज) को भी ध्यान में रखे जाने की आवश्यकता है। लगातार होने वाले दो गणना दौरों में इस व्याप्ति में निम्नलिखित दो कारणों से परिवर्तन हो सकते हैं:-(क) वर्तमान कंपनियों द्वारा रिपोर्टिंग का बेहतर अनुपालन होना एवं (ख) वर्ष के दौरान प्रत्यक्ष निवेश कंपनियों की वृद्धि/कमी होना।

14,296 कंपनियों, जिन्होंने अंतर्वाही साधा निवेश रिपोर्ट किया है, उनमें से 13,968 कंपनियां सूचीबद्ध नहीं थीं और 10,777 कंपनियां विदेशी कंपनियों की भारतीय अनुषंगिकियां थीं।इस प्रकार समग्र सतर पर, रिपोर्ट करने वानी कंपनियों की कुल इक्विटी में एफडीआई 74.0 प्रतिशत के उच्च स्तर पर था (63.6 प्रतिशत वित्तीय कंपनियों के लिए और 76.2 प्रतिशत गैर- वित्त कंपनियों के लिए)।

III. एफडीआई और ओडीआई: अंकित मूल्य एवं बाजार मूल्य

एफएलए गणना में, कंपनियां इक्विटी पूंजी के संबंध में सूचना अंकित मूल्य और बाजार मूल्य दोनों रूपों में देती हैं। सूचीबद्ध कंपनियों के मामले में, शेयरों का मूल्यन संदर्भ अवधि के अंतिम दिवस (अर्थात, मार्च के अंत में) में बाजार मूल्य पर किया जाता है। अंतर्वाही प्रत्यक्ष निवेश करने वाली लगभग 98 प्रतिशत कंपनियां सूचीबद्ध नहीं थीं। उनको सलाह दी गई कि बाजार मूल्यन के लिए आईएमएफ की सीडीआईएस गाइड 2010 में किए गए उल्लेख के अनुसार वे अंकित मूल्य पर निधि स्वाधिकृत करने (ओएफबीवी) की प्रणाली का प्रयोग करें। इक्विटी निवेश का ओएफबीवी, कंपनी की निवल मालियत (अर्थात चुकता पूंजी, सहभागी अधिमानी शेयरों, आरक्षित निधियों तथा अतिरेकों का योग) में अनिवासी इक्विटी धारिता का हिस्सा (शेयर) होती है।

2014-15 के दौरान, भारत की कंपनियों में एफडीआई स्टॉकों का बाजार मूल्य रु. 4,567.1 बिलियन (निवेश प्रवाहों और मूल्यन परिवर्तनों सहित) बढ़कर मार्च 2015 में रु.19,629.7 बिलियन रहा जिसमें से लगभग 94 प्रतिशत इक्विटी में धारित था। दूसरी ओर, वर्ष के दौरान ओडीआई के स्टॉक में रु. 260.7 बिलियन की वृद्धि के साथ यह रु.5,320.1 बिलियन पहुंच गया। इस प्रकार बाजार मूल्य पर, अंतर्वाही की तुलना में बाहरी सीधे निवेश का अनुपात मार्च 2014 के 37.1 प्रतिशत से कमहोकर मार्च 2015 में 27.1 प्रतिशत हो गया और इसी अवधि के दौरान संबंधित अंतर रु. 9,481.8 बिलियन से बढ़कर रु. 14,309.6 बिलियन हो गया (चार्ट-1)। रिपोर्ट किए गए कुल एफडीआई में अंकित मूल्य पर इक्विटी की भागीदारी रु.3,577.9बिलियन थी, जिसका 84.7 प्रतिशत गैर-वित्त कंपनियों में लगा था। मार्च 2015 में कंपनियों की इक्विटी में बाजार मूल्य की तुलना में अंकित मूल्य के एफडीआई का अनुपात समग्र स्तर पर 5.2 प्रतिशत था परंतु सभी क्षेत्रों में इसमें काफी परिवर्तन देखा गया (चार्ट-2)।

चार्ट 1 : अंतर्वाही एवं बहिर्वाही प्रत्यक्ष निवेश

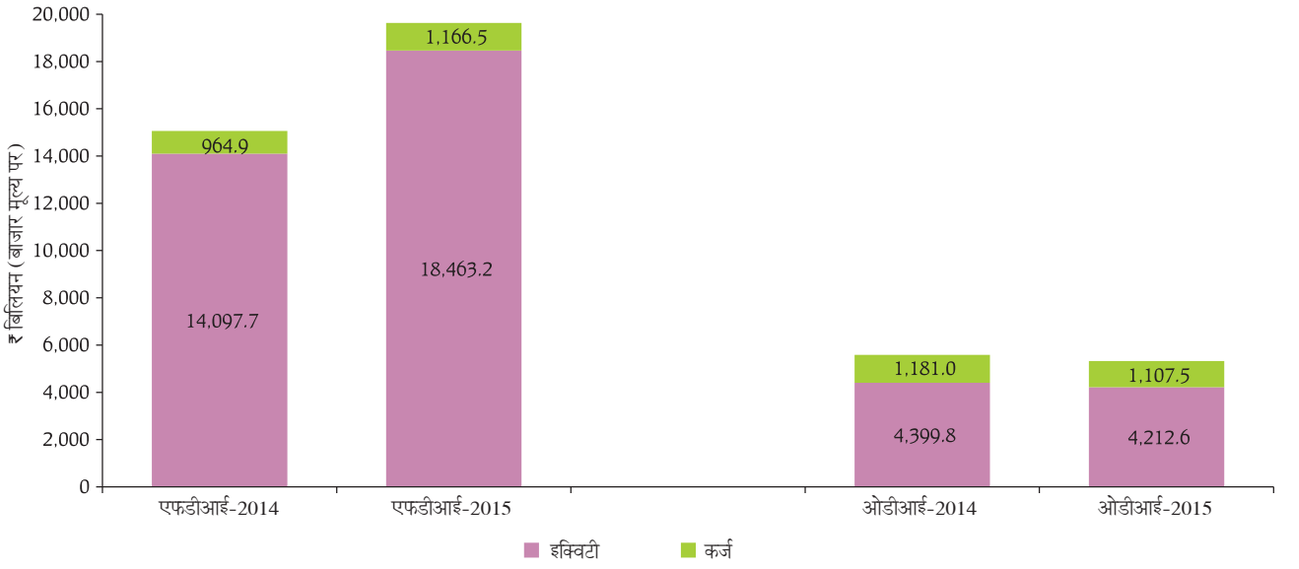

IV. अंतर्वाही प्रत्यक्ष निवेश का सेक्टर-वार वितरण

अंकित मूल्य पर 14,296 एफडीआई कंपनियों में किए गए कुल एफडीआई इक्विटी में निर्माण क्षेत्र (47.4 प्रतिशत) की भागीदारी सेवा क्षेत्र (42.3 प्रतिशत) की तुलना में उच्चतर रही (सारणी-2)। निर्माण क्षेत्र में मोटर वाहन समूह और सेवा क्षेत्र में वित्त तथा बीमा गतिविधियों में अंकित मूल्य पर निवेश की हिस्सेदारी अधिक रही।

सारणी 2 : एफडीआई कंपनियों की क्षेत्रवार इक्विटी सहभागिता : मार्च 2015

अंकित मूल्य पर (₹ बिलियन)

गतिविधि	कुल इक्विटी (निवासी एवं अनिवासी)	एफडीआई इक्विटी हित
1. कृषि से संबंधित पौध रोपण एवं संबद्ध गतिविधियां	12.9	10.7
2. खनन	56.5	29.2
3. विनिर्माण	2,036.1	1,696.8
4. बिजली, गैस, स्टीम एवं वातानुकूलन	301.0	173.6
5. जल आपूर्ति, जल निकासी, अपशिष्ट प्रबंधन एवं निवारक गतिविधियां	4.4	3.7
6. निर्माण कार्य	218.1	152.0
7. सेवाएं	2,208.6	1,511.9
कुल	**4,837.6**	**3,577.9**

दूसरी ओर, बाजार मूल्य पर आधे से अधिक एफडीआई निर्माण क्षेत्र में हुआ, जो मार्च 2015 में रु.10,208.1 बिलियन बैठता है। निर्माण क्षेत्र के भीतर रसायन एवं संबंधित उत्पाद की हिस्सेदारी सबसे अधिक है, उसके बाद पेट्रो-रसायन और मोटर-वाहन समूह आते हैं। सेवा संबंधी गतविधियों में "सूचना और संचार सेवाएं" तथा "वित्त और बीमा गतिविधियां" एफडीआई के लिए सर्वाधिक आकर्षक सेवाएं रहीं।

बाजार मूल्यन के संदर्भ में, शीर्ष 10 एफडीआई सेक्टरों की बाजार मूल्य पर 50.0 प्रतिशत भागीदारी और अंकित मूल्य पर एफडीआई इक्विटी की 38.3 प्रतिशत की भागीदारी रही (चार्ट-2)। यह उल्लेखनीय है कि अंकित मूल्यन की तुलना में बाजार मूल्यन का अनुपात अत्यधिक विवधतापूर्ण है जो इन प्रमुख सेक्टरों के बीच भी नज़र आता है, जैसे तंबाकू उत्पाद आदि के निर्माण के लिए सर्वाधिक और मोटर-वाहन निर्माण समूह के लिए न्यूनतम। बाजार मूल्यन पर सेक्टर-वार एफडीआई का ब्रेक-अप सारणी-3 में प्रस्तुत किया गया है।

2014-15 के दौरान, अंतर्वाही एफडीआई में अंकित मूल्य पर 10.2 प्रतिशत की तेजी आई और बाजार मूल्य पर रुपए के संदर्भ में 33.5 प्रतिशत की तेजी आई। परिवर्तन बकाया की स्थिति में अंतर्वाह/ बहिर्वाह और विनिमय दर परिवर्तनों का अंकित मूल्य तथा बाजार मूल्य दोनों पर वर्ष के दौरान की स्थिति को विचार में लेते हैं।

चार्ट 2 : बाजार मूल्य एवं अंकित मूल्य पर एफडीआई इक्विटी : मार्च 2015 में शीर्ष 10 क्षेत्र

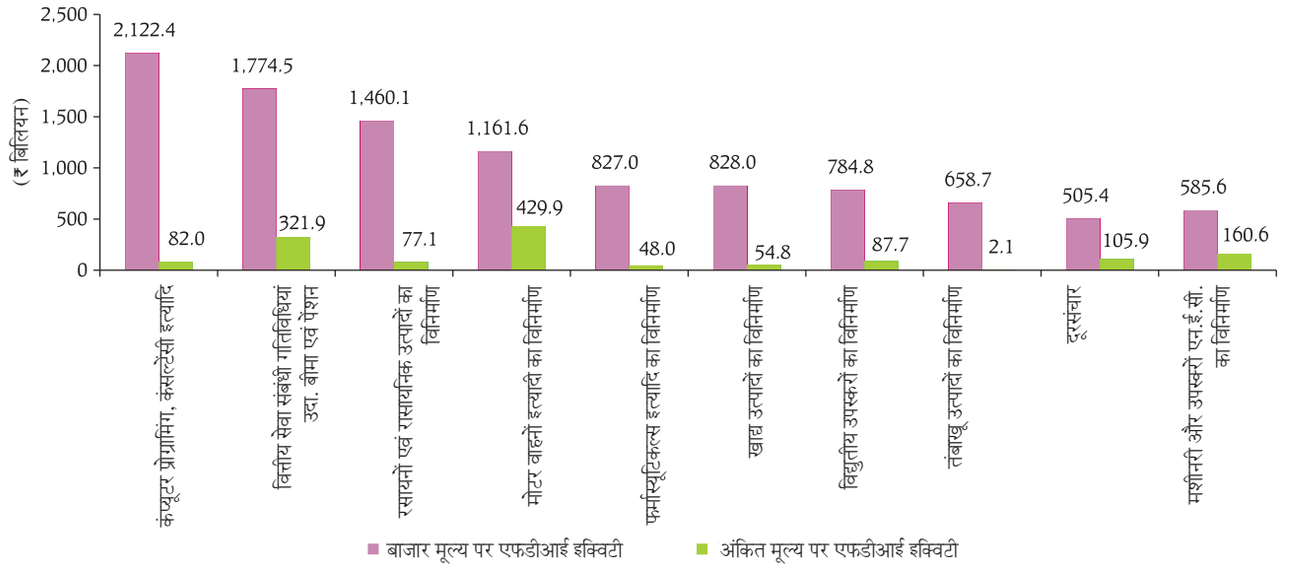

इसके अतिरिक्त- जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है- इसमें बाजार मूल्य पर किए गए मूल्यन परिवर्तन भी शामिल होते हैं। एफडीआई के बाजार मूल्य में हुई संगत बड़ी बढ़ोतरी वर्ष के दौरान बड़े मूल्यन लाभों को दर्शाती है (सारणी-4)।

सारणी 3 : एफडीआई इक्विटी एवं कर्ज का क्षेत्रवार वितरण : मार्च 2015

बाजार मूल्य पर (₹ बिलियन)

गतिविधि	इक्विटी	कर्ज	कुल एफडीआई
ए. कृषि से संबंधित पौध रोपण एवं संबद्ध गतिविधियां	**50.5**	**1.1**	**51.6**
बी. खनन	**666.3**	**3.4**	**669.7**
सी. विनिर्माण	**9,630.2**	**577.9**	**10,208.1**
जिसमें से :			
रसायन एवं रासायनिक उत्पाद	1,460.1	30.2	1,490.3
फर्मास्यूटिकल्स, औषधीय रासायनिक और वनस्पति उत्पाद	827.0	95.6	922.6
मोटर गाड़ी, ट्रेलर एवं सेमी-ट्रेलर	1,161.6	134.1	1,295.7
तंबाखू उत्पाद	658.7	–	658.7
खाद्य उत्पाद	828.0	10.3	838.3
विद्युतीय उपस्कर	784.8	24.9	809.7
मशीनरी एवं उपस्कर	585.6	28.1	613.7
कोक एवं परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद	355.4	-12.8	342.6
कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक एवं ऑप्टिकल उत्पाद	195.4	77.2	272.6
मूलभूत धातुएं	156.1	32.4	188.5
डी. बिजली, गैस, स्टीम एवं वातानुकूलन आपूर्ति	**345.1**	**88.2**	**433.3**
ई. जल आपूर्ति, जल निकासी, अपशिष्ट प्रबंधन एवं निवारक गतिविधियां	**2.9**	**0.4**	**3.3**
एफ. निर्माण कार्य	**413.9**	**101.4**	**515.3**
जी. सेवाएं	**7,354.5**	**393.9**	**7,748.4**
जिसमें से :			
सूचना एवं संचार	3,377.1	179.6	3,556.7
वित्तीय एवं बीमा संबंधी गतिविधियां	2,284.5	28.7	2,313.2
कुल	**18,463.4**	**1,166.3**	**19,629.7**

सारणी 4 : 14,296 एफडीआई कंपनियों की गतिविधि-वार अंकित मूल्य तथा बाजार मूल्य पर एफडीआई इक्विटी

राशि (₹ बिलियन)

गतिविधि	अंकित मूल्य पर एफडीआई इक्विटी		बाजार मूल्य पर एफडीआई इक्विटी	
	राशि	प्रतिशत संवृद्धि	राशि	प्रतिशत संवृद्धि
ए. कृषि से संबंधित पौध रोपण एवं संबद्ध गतिविधियां	**10.7**	***42.7***	**50.5**	***9.5***
बी. खनन	**29.2**	***2.8***	**666.3**	***-3.9***
सी. विनिर्माण	**1,696.8**	***11.5***	**9,630.2**	***40.1***
खाद्य उत्पाद का विनिर्माण	54.8	*-1.6*	828.0	*47.4*
पेय पदार्थों का विनिर्माण	18.6	*22.4*	142.5	*16.4*
तंबाखू उत्पादों का विनिर्माण	2.1	*0.0*	658.7	*-7.9*
वस्त्र का विनिर्माण	22.7	*31.2*	34.8	*-1.4*
पहनने वाले वस्त्रों का विनिर्माण	8.0	*29.0*	96.9	*83.5*
चमड़ा और संबंधित उत्पादों का विनिर्माण	1.1	*10.0*	41.3	*-1.0*
लकड़ी एवं लकड़ी/कॉर्क उत्पादों का विनिर्माण(उदा. फर्नीचर)	0.1	*0.0*	0.1	-
कागज़ और कागज़ उत्पादों का विनिर्माण	11.3	*7.6*	36.0	*7.8*
रिकार्डेड मीडिया की छपाई और पुनः उत्पादन	2.3	*53.3*	1.1	*-26.7*
कोक एवं परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों का विनिर्माण	92.0	*46.0*	355.4	*59.8*
रसायन एवं रासायनिक उत्पाद का विनिर्माण	77.1	*-5.0*	1,460.1	*45.3*
फर्मास्यूटिकल्स, औषधीय रासायनिक और वनस्पति उत्पादों का विनिर्माण	48.0	*0.2*	827.0	*15.8*
रबड़ और प्लास्टिक उत्पादों का विनिर्माण	78.3	*4.5*	134.1	*17.0*
गैर-धात्विक खनिज उत्पादों का विनिर्माण	30.4	*15.6*	188.3	*28.4*
मूल धातुओं का विनिर्माण	105.4	*-0.9*	156.1	*0.8*
मशीनरी एवं उपस्कर को छोड़कर फैब्रीकेटेड धात्विक उत्पादों का विनिर्माण	28.4	*-3.4*	53.9	*93.2*
कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक एवं ऑप्टिकल उत्पादों का विनिर्माण	42.7	*0.9*	195.4	*16.7*
विद्युतीय उपस्कर का विनिर्माण	87.7	*10.0*	784.8	*61.6*
मशीनरी एवं उपस्कर एन.ई.सी. का विनिर्माण	160.6	*66.4*	585.6	*29.7*
मोटर वाहन, ट्रेलरों और सेमी-ट्रेलरों का विनिर्माण	429.9	*3.1*	1,161.6	*68.8*
अन्य परिवहन उपकरण का विनिर्माण	45.9	*7.2*	81.1	*28.1*
फर्निचर का विनिर्माण	1.8	*28.6*	2.2	*37.5*
अन्य विनिर्माण	337.5	*14.6*	1,781.1	*70.5*
मशीनरी और उपस्करों की मरम्मत और पुनःस्थापना	10.1	*3.1*	24.1	*23.0*
डी. बिजली, गैस, स्टीम एवं वातानुकूलन आपूर्ति	**173.6**	***8.6***	**345.1**	***15.0***
ई. जल आपूर्ति, जल निकासी, अपशिष्ट प्रबंधन एवं निवारक गतिविधियां	**3.7**	***-30.2***	**2.9**	***7.4***
एफ. निर्माण कार्य	**152.0**	***11.4***	**413.9**	***10.7***
जी. सेवाएं	**1,511.9**	***8.9***	**7,354.5**	***32.7***
1. थोक एवं खुदरा व्यापार, मोटर वाहनों एवं मोटरसाइकिलों की मरम्मत	260.1	*1.0*	419.5	*50.4*
2. परिवहन एवं भंडारण	69.2	*7.5*	363.5	*69.0*
3. निवास एवं खाद्य सेवा गतिविधियां	48.0	*9.1*	120.7	*8.3*
4. सूचना एवं संचार	258.3	*9.4*	3,377.1	*29.1*
5. वित्तीय एवं बीमा संबंधी गतिविधियां	548.5	*10.5*	2,284.5	*33.5*
6. भू-संपदा गतिविधियां	38.3	*-4.3*	119.7	*41.8*
7. अन्य सेवा गतिविधियां	289.5	*15.8*	669.5	*27.9*
कुल	**3,577.9**	***10.2***	**18,463.4**	***33.5***

गतिविधि-वार इक्विटी में एफडीआई की भागीदारी से यह दृष्टिगत होता है कि, अंकित मूल्य के संदर्भ में 'मशीनरी और उपकरण का निर्माण' में वर्ष के दौरान सर्वाधिक ऊंची संवृद्धि रही। अन्य प्रमुख गतिविधियों जिनमें नए निवेश में उल्लेखनीय प्रगति हुई उनमें 'वित्त और बीमा गतिविधियां', 'सूचना और संचार' तथा 'निर्माण' क्षेत्र शामिल हैं।

चार्ट 3 : बाजार मूल्य पर प्रत्यक्ष निवेश - प्रमुख हिस्सेदार देश : मार्च 2015

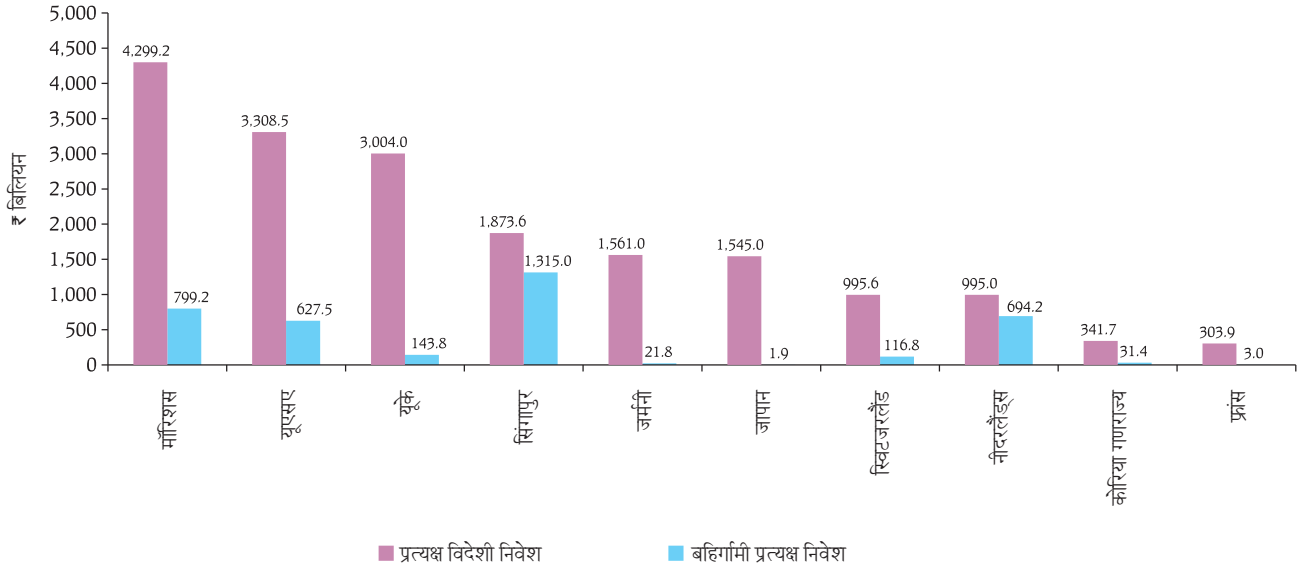

अधिकांश क्षेत्रों में बाजार मूल्य पर विदेशी संस्थागत निवेश इक्विटी में बहुत वृद्धि होने के कारण प्राप्तियों के मूल्यांकन में बहुत वृद्धि हुई। खनन और तंबाखू क्षेत्र उन प्रमुख क्षेत्रों में से थे जिनको मूल्यांकन में हानि हुई।

V. प्रत्यक्ष निवेश के स्रोत/गंतव्य

शीर्ष दस स्रोत/गंतव्य देशों द्वारा प्रत्यक्ष निवेश की मात्रा और जिन मामलों में ये कंपनियां भारतीय प्रत्यक्ष निवेशकों के लिए भी निवेश का गंतव्य थीं वहां उनके अंतर्वाही/बहिर्वाही निवेश की राशि के साथ चार्ट 3 में दशाई गई हैं। अंतर्वाही प्रत्यक्ष निवेश के स्रोतों में से मॉरिशस के निवेशकों की हिस्सेदारी सर्वाधिक (21.9 प्रतिशत) थी उसके बाद अमेरिका (16.9 प्रतिशत) तथा यूके (15.3 प्रतिशत) का स्थान रहा। इन दस देशों की हिस्सेदारी एफडीआई में 92.9 प्रतिशत और ओडीआई में 70.6 प्रतिशत रही। ओडीआई में प्रमुख गंतव्य सिंगापुर (24.7 प्रतिशत हिस्सा) रहा उसके बाद मॉरिशस (15.0 प्रतिशत) तथा नीदरलैंड्स (13.0 प्रतिशत) का स्थान रहा।

VI. अन्य निवेश

वित्तीय देयताओं एवं आस्तियों (एफएलए) की गणना में प्रत्यक्ष निवेश कंपनियों ने उनकी अन्य वित्तीय देयताओं एवं आस्तियों को *'अन्य निवेश'* के अंतर्गत अलग से भी रिपोर्ट किया है। इनमें असंबद्ध (तृतीय पक्ष) अनिवासी संस्थाओं में धारित व्यापार ऋण, कर्ज, मुद्रा तथा जमाराशियों और अन्य प्राप्त तथा देय खातों से संबंधित दावे और देयताएं शामिल हैं किंतु अंतर-कंपनी कर्ज लेनदेनों (उदाहरण के लिए, प्रत्यक्ष निवेशकों तथा अनुषंगियों, सहयोगियों, मूल कंपनियों, सहयोगी कंपनियों तथा शाखाओं के बीच उधार लेने और उधार देने) को शामिल नहीं किया गया है, जिन्हें प्रत्यक्ष निवेश के अंतर्गत शामिल किया गया है। ऋणों में बाह्य वाणिज्यिक उधारियों, वित्तीय ठेकों एवं पुनर्खरीद करारों तथा अन्य ऋणों और अग्रिमों को शामिल किया गया है। यदि प्रत्यक्ष निवेश करने वाली रिपोर्टिंग कंपनी बैंक है, तो अनिवासियों की जमाराशि के साथ ही साथ वोस्त्रो खातों में शेष जमाराशि और नोस्त्रो खातों में शेष राशि को मुद्रा एवं जमाराशियों के अंतर्गत 'बकाया देयताओं' की मद में शामिल किया गया है। नोस्त्रो खातों में शेष जमाराशि तथा वोस्त्रो खातों में नामे शेष राशि को 'बकाया दावों' की मद के अंतर्गत इसी प्रकार से दर्शाया गया है। यहां पर विविध प्राप्य एवं देय (उदाहरण के लिए, बकाया राशि के ब्याज भुगतानों से संबंधित खातों, बकाया राशि से ऋण भुगतान, बकाया मजदूरी और वेतन, पूर्वदत्त बीमा प्रीमियम, बकाया करों) राशियों को भी शामिल किया गया है।

रिपोर्ट करने वाली कंपनियों की इस तरह की 'अन्य निवेश' देयताएं मार्च 2015 के अंत में ₹12,822 बिलियन रहीं और

चार्ट 4 : विदेशी प्रत्यक्ष निवेश कंपनियों के अन्य विदेशी निवेश : मार्च 2015

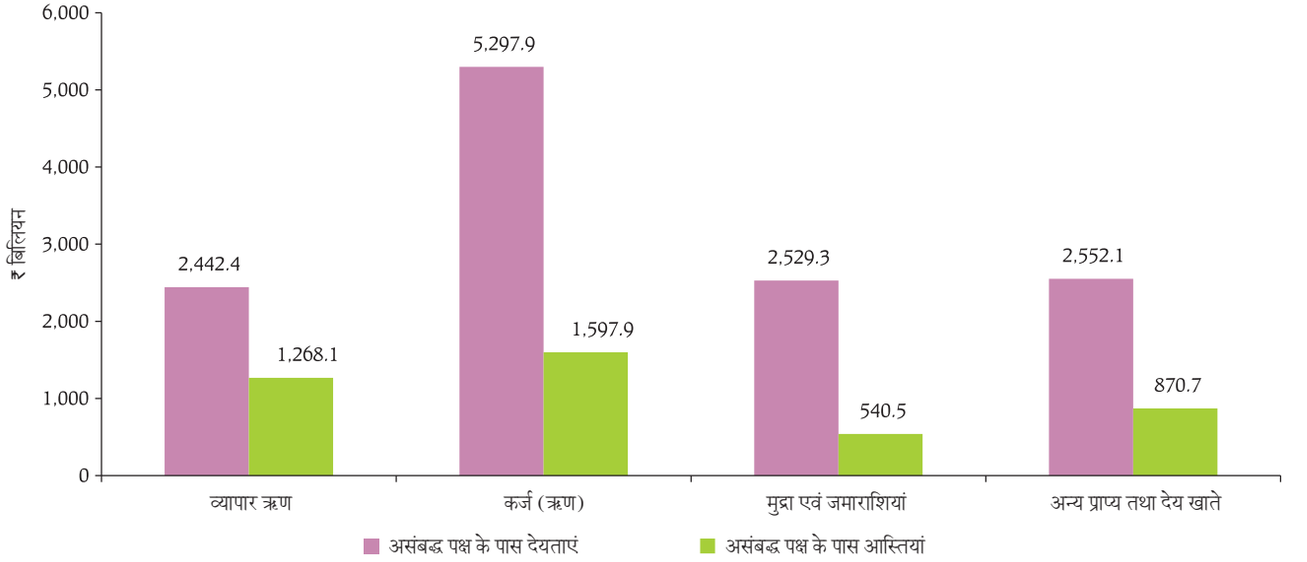

अनुरूपी विदेशी आस्तियों का मूल्य इन देयताओं का 33.4 प्रतिशत (पिछले वर्ष 35.0 प्रतिशत) रहा। 2014-15 में अन्य निवेश देयताओं में मुद्रा तथा जमाराशियों की हिस्सेदारी बढ़कर 19.7 प्रतिशत (पिछले वर्ष के 17.0 प्रतिशत से) हो गई है किंतु ऋणों की हिस्सेदारी घटकर 41.3 प्रतिशत (एक वर्ष पहले 47.6 प्रतिशत) एवं व्यापार ऋण की हिस्सेदारी घटकर 19.0 प्रतिशत (एक वर्ष पहले 21.1 प्रतिशत) रह गई। अनुरूपी विदेशी आस्तियों के बीच ऋणों, व्यापार ऋण एवं मुद्रा और जमाराशियां मार्च 2015 में क्रमशः 37.4 प्रतिशत, 29.6 प्रतिशत तथा 12.6 प्रतिशत रहीं।

VII. अनुषंगी कंपनियों की बिक्री और खरीद

विदेशी सहयोगियों की व्यापार सांख्यिकी, वस्तुओं एवं/या सेवाओं की विदेशी सहयोगियों द्वारा स्थानीय अर्थव्यवस्था में बिक्री के माध्यम से वाणिज्यिक उपस्थिति की माप को दर्शाती है। एफडीआई सांख्यिकी में 10-प्रतिशत या अधिक मतदान अधिकार तक विदेशी हितों को शामिल किया जाता है किंतु एफएटीएस में सभी सहयोगियों को समाहित किया जाता है जो विदेश-नियंत्रित अनुषंगी हों (अर्थात, किसी एक प्रत्यक्ष निवेशक की इक्विटी धारिता 50 प्रतिशत से अधिक हो)। एफडीआई में निवेश प्रवाहों तथा कंपनियों में स्टॉक, जहां पर विदेशी निवेशक के स्थायी हित हों, के मौद्रिक मूल्य हित निहित होते हैं किंतु एफएटीएस का संबंध कंपनियों, जिनमें विदेशी निवेशक की प्रमुख हिस्सेदारी है, की आर्थिक गतिविधियों (मुख्यतः बिक्री, व्ययों, निर्यातों और आयातों) से होता है।

बहिर्वाही प्रत्यक्ष निवेश रिपोर्ट करने वाली 2,573 भारतीय कंपनियों में से 2,129 कंपनियों की कुल 3,608 विदेशी अनुषंगी कंपनियां थीं जिनसे संबंधित आंकड़ों को बहिर्वाही एफएटीएस के अंतर्गत शामिल किया गया है। बहुत सी अनुषंगी कंपनियों ने प्रारंभिक अवस्था में होने या अन्य संभावित कारणों से बिक्री/खरीद/निर्यात/आयात के संबंध में रिपोर्ट नहीं किया। 2014-15 के दौरान भारतीय अनुषंगियों की कुल बिक्री में निर्यात का हिस्सा 26.7 प्रतिशत रहा जबकि कुल खरीद में आयात का हिस्सा 46.7 प्रतिशत रहा (सारणी 5)। 16,242 कंपनियों में से अंतर्वाही प्रत्यक्ष निवेश की रिपोर्ट करने वाली 10,777 भारतीय

सारणी 5 : 2,129 भारतीय कंपनियों की 3,608 विदेशी अनुषंगी कंपनियों की बिक्री और खरीद

(राशि ₹ बिलियन में)

मद	2013-14	2014-15
कुल बिक्री	3,136.1	3,529.7
जिसमें से : निर्यात	888.1	940.8
कुल खरीद	2,334.6	2,692.4
जिसमें से : आयात	1,038.5	1,257.6

अनुषंगियों से समग्र स्तर पर एकत्र किए गए अंतर्वाही एफएटीएस आंकड़ों से इन कंपनियों की कुल बिक्री में निर्यात का हिस्सा 34.0 प्रतिशत तथा कुल आयात का हिस्सा 44.9 प्रतिशत रहा।

2014-15 में 10,777 विदेशी अनुषंगी कंपनियों की निर्यात सहित कुल बिक्री 11.8 प्रतिशत बढ़कर ₹16,590.4 बिलियन हो गई (2013-14 में ₹14,835.7 बिलियन)। इस अवधि में सेवा क्षेत्र का हिस्सा 33.2 प्रतिशत से बढ़कर 35.6 प्रतिशत हो जाने से कुल बिक्री में विनिर्माण क्षेत्र का हिस्सा पिछले वर्ष के 63.6 प्रतिशत से घटकर 61.5 प्रतिशत रह गया। बिक्री में 'सूचना एवं संचार सेवाएं' का सर्वाधिक 18.1 प्रतिशत हिस्सा था जिसमें से तीन चौथाई से अधिक निर्यात की भूमिका थी। 2014-15 में विदेशी अनुषंगी कंपनियों की कुल खरीद (आयात सहित) 10.4 प्रतिशत बढ़कर ₹10,465.6 बिलियन हो गई (2013-14 में ₹9,480.3 बिलियन)। बिक्री के अग्रानुक्रम में कुल खरीद में सेवा क्षेत्र का हिस्सा भी बढ़ा, जिसने विनिर्माण क्षेत्र के हिस्से को प्रति-संतुलित किया। बिक्री की तुलना में खरीद का अनुपात लगभग 63 प्रतिशत बना रहा (सारणी 6)।

2014-15 में, विदेशी अनुषंगी कंपनियों का समग्र निर्यात 15.2 प्रतिशत बढ़कर ₹5,637.4 बिलियन हो गया (एक वर्ष पहले ₹4,895 बिलियन) (सारणी 7)। 'सूचना एवं संचार सेवाएं' प्रमुखता से निर्यातोन्मुख क्षेत्र बनी रहीं जबकि निर्यात का कुल बिक्री में 75.8 प्रतिशत हिस्सा रहा। 2014-15 के दौरान, रिपोर्ट करने वाली अनुषंगी कंपनियों के कुल नियात में इस क्षेत्र का 40.5 प्रतिशत हिस्सा रहा। 'खाद्य उत्पाद' क्षेत्र की बिक्री में निर्यात का हिस्सा 2013-14 के 31.4 प्रतिशत से बढ़कर 2014-15 में 51.2 प्रतिशत हो गया। विनिर्माण क्षेत्र की बिक्री की तुलना में निर्यात अनुपात में वृद्धि होने में इसका योगदान रहा। 2014-15 में, अनुषंगी कंपनियों का कुल आयात में 9.9 प्रतिशत की वृद्धि के साथ ₹4,695.2 बिलियन हो गया (एक वर्ष पहले ₹4,274.5 बिलियन)। विनिर्माण क्षेत्र के अंतर्गत प्रमुख आयातक

सारणी 6 : 2014-15 के दौरान 10,777* अनुषंगी कंपनियों की गतिविधि-वार बिक्री और खरीद

(राशि ₹ बिलियन में)

गतिविधि	राशि		कुल में प्रतिशत हिस्सा	
	बिक्री	खरीद	बिक्री	खरीद
ए. कृषि से संबद्ध, वृक्षारोपण एवं सहबद्ध गतिविधियां	**64.5**	**51.7**	**0.4**	**0.5**
बी. खनन	**113.0**	**78.7**	**0.7**	**0.8**
सी. विनिर्माण	**10,207.5**	**6,985.8**	**61.5**	**66.8**
जिसमें से :				
खाद्य उत्पाद	1,055.7	828.6	6.4	7.9
कोक एवं परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद	945.5	798.7	5.7	7.6
रसायन एवं रासायनिक उत्पाद	866.6	396.9	5.2	3.8
फर्मास्यूटिकल्स, औषधीय एवं रासायनिक उत्पाद	323.4	166.0	1.9	1.6
कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रकाशकीय उत्पाद	908.9	583.9	5.5	5.6
विद्युतीय उपस्कर	578.1	412.0	3.5	3.9
मशीनरी और उपस्कर एन.ई.सी.	656.4	410.4	4.0	3.9
मोटर गाड़ियां, ट्रेलर्स एवं सेमी-ट्रेलर्स	2,090.2	1,481.4	12.6	14.2
डी. विद्युत, गैस, वाष्प एवं वातानुकूलन आपूर्ति	**42.1**	**43.6**	**0.3**	**0.4**
ई. जल आपूर्ति : नालियां, कचरा प्रबंध तथा सुधार की गतिविधियां	**6.7**	**3.4**	**0**	**0**
एफ. कंस्ट्रक्शन	**247.9**	**153.5**	**1.5**	**1.5**
जी. सेवाएं	**5,908.7**	**3,148.9**	**35.6**	**30.1**
जिसमें से :				
थोक एवं खुदरा व्यापार, मोटर गाड़ियों और मोटरसाइकिलों की मरम्मत	1,510.3	1,324.5	9.1	12.7
यातायात एवं भंडारण	235.9	157.8	1.4	1.5
सूचना एवं संचार	3,009.4	1,092.6	18.1	10.4
वित्त एवं बीम गतिविधियां	283.7	143.4	1.7	1.4
कुल	**16,590.4**	**10,465.6**	**100**	**100**

* 10,777 अनुषंगी कंपनियों में से 8,032 ने बिक्री संबंधी तथा 5,400 ने खरीद संबंधी रिपोर्ट भेजी।

सारणी 7 : 2014-15 के दौरान 10,777* अनुषंगी कंपनियों के गतिविधि-वार आयात और निर्यात

(राशि ₹ बिलियन में)

गतिविधि	राशि		कुल में प्रतिशत हिस्सा	
	निर्यात	आयात	बिक्री में निर्यात	खरीद में आयात
ए. कृषि से संबद्ध, वृक्षारोपण एवं सहबद्ध गतिविधियां	**7.7**	**6.8**	**11.9**	**13.2**
बी. खनन	**5.8**	**8.4**	**5.1**	**10.7**
सी. विनिर्माण	**2,505.7**	**3,474.0**	**24.5**	**49.7**
जिनमें से :				
खाद्य उत्पाद	540.4	590.8	51.2	71.3
कोक एवं परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद	405.3	618.4	42.9	77.4
रसायन एवं रासायनिक उत्पाद	107.1	165.6	12.4	41.7
फर्मास्यूटिकल्स, औषधीय एवं रासायनिक उत्पाद	91.6	87.7	28.3	52.8
कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रकाशकीय उत्पाद	137.3	445.1	15.1	76.2
विद्युतीय उपस्कर	100.3	158.3	17.3	38.4
मशीनरी और उपस्कर एन.ई.सी.	193.6	155.8	29.5	38.0
मोटर गाड़ियां, ट्रेलर्स एवं सेमी-ट्रेलर्स	417.9	386.1	20.0	26.1
डी. विद्युत, गैस, वाष्प एवं वातानुकूलन आपूर्ति	**2.3**	**4.3**	**5.5**	**9.9**
ई. जल आपूर्ति : नालियां, कचरा प्रबंध तथा सुधार की गतिविधियां	**0.5**	**0.1**	**7.5**	**2.9**
एफ. कंस्ट्रक्शन	**21.5**	**38.4**	**8.7**	**25**
जी. सेवाएं	**3,093.9**	**1,163.2**	**52.4**	**36.9**
जिनमें से :				
थोक एवं खुदरा व्यापार, मोटर गाड़ियों और मोटरसाइकिलों की मरम्मत	284.3	737.4	18.8	55.7
यातायात एवं भंडारण	62.5	29.1	26.5	18.4
सूचना एवं संचार	2,282.6	249.6	75.8	22.8
वित्त एवं बीम गतिविधियां	138.4	67.4	48.8	47.0
कुल	**5,637.4**	**4,695.2**	**34.0**	**44.9**

* 10,777 अनुषंगी कंपनियों में से 6,024 ने निर्यात संबंधी तथा 4,033 ने आयात संबंधी रिपोर्ट भेजी।

क्षेत्रों में 'कोक एंड परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद', 'खाद्य उत्पाद' एवं 'कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रकाशकीय उत्पाद' शामिल हैं। 'टेक्सटाइल्स' तथा 'मूल धातु' समूहों की खरीद में आयात का हिस्सा काफी बढ़ा। प्रमुख समूहों के मध्य, विनिर्माण कंपनियों द्वारा खरीद में आयात का हिस्सा 49.7 प्रतिशत रहा जबकि सेवा क्षेत्र की कंपनियों का हिस्सा 36.9 प्रतिशत रहा।

VIII. उपसंहार

यहां प्रस्तुत की गई वित्तीय देयता आस्ति संबंधी गणना के संक्षिप्त परिणाम उनके विभिन्न आयामों, जैसे कि उनके परिमाण तथा निवेश के अंकित मूल्य और बाजार मूल्य में भिन्नता, स्रोत/गंतव्य देशों, निवेश का क्षेत्रवार वितरण तथा संबंधित अनुषंगी कंपनियों से संबंधित एफएटीएस सांख्यिकी; के बारे में रोचक प्रमुख तथ्यों को प्रस्तुत करती है। रिपोर्ट करने वाली अधिकांश कंपनियों के गैर-सूचीबद्ध होने के कारण उन्होंने अपने निवेश के बाजार मूल्यों के आकलन में ओएफबीवी प्रणाली का प्रयोग किया है।

2014-15 के दौरान, नए निवल निवेश तथा मूल्यांकन से होने वाले लाभों के कारण भारत में विदेशी कंपनियों द्वारा किए गए प्रत्यक्ष निवेश के बाजार मूल्य में वृद्धि जारी रही। वर्ष के दौरान अंतर्वाही एफडीआई में होने वाली वृद्धि ओडीआई की तुलना में काफी तीव्र रही जिसके परिणामस्वरूप बाजार मूल्य पर एफडीआई की तुलना में ओडीआई अनुपात में कमी आई। समग्र स्तर पर, मार्च 2015 में अंतर्वाही एफडीआई इक्विटी का अंकित मूल्य की तुलना में बाजार मूल्य अनुपात 5.2 प्रतिशत रहा। सभी क्षेत्रों से संबंधित इस अनुपात में व्यापक परिवर्तन देखे गए और पूंजी की तीव्रता, पूंजी पर प्रतिलाभ तथा भविष्य की संभावनाओं जैसे घटकों के कारण विनिर्माण क्षेत्र की तुलना में सेवा क्षेत्र से संबंधित यह अनुपात काफी उच्च स्तर पर बना रहा।

सीमा-पार की अनुषंगी कंपनियों की बढ़ी हुई गतिविधियों के साथ वैश्विक गांव में भारत के व्यापार का और अधिक एकीकरण हुआ। 2014-15 के दौरान, विदेशी अनुषंगी कंपनियों की बिक्री/खरीद में द्वि-अंकीय वृद्धि हुई। भारतीय और विदेशी -दोनों अनुषंगी कंपनियों के कारोबार में विदेशी निवेश का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विदेश स्थित भारतीय अनुषंगी कंपनियों तथा भारत में विदेशी अनुषंगी कंपनियों से संबंधित खरीद में आयात के हिस्से व्यापक रूप से तुलनीय थे। विदेशी भारतीय अनुषंगी कंपनियों की तुलना में भारत स्थित विदेशी अनुषंगी कंपनियों की बिक्री में निर्यात का हिस्सा अधिक रहा। भारत स्थित विदेशी अनुषंगी कंपनियों के बीच सूचना एवं संचार क्षेत्र सबसे बड़ा निर्यातोन्मुख क्षेत्र बना रहा।